24 जनवरी 2017 को इंदौर स्पोर्ट्स राइटर्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित खेल पुरस्कार समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय अध्यक्ष का भाषण।

1. आज इंदौर स्पोर्ट्स राइटर्स एसोसिएशन (इस्पोरा) के पुरस्कार समारोह में आप खेल पत्रकारों के बीच उपस्थित होकर मुझे अत्यधिक खुशी हो रही है। चूंकि किसी भी समाज में खेलकूद का एक अलग महत्व होता है, वे लोग जो खेल प्रतिभाओं एवं खेल के प्रचार–प्रसार हेतु अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा लोगों को उससे जोड़ते हैं, वे सर्वथा सम्मान के योग्य हैं। जी हां, मैं खेल पत्रकारों के बारे में ही बात कर रही हूं।

2. खेल पत्रकार कुछ अलग होते हैं। उनमें एक विशेष प्रकार की खूबी होती है। ऐसे पत्रकारों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। राजनीति में होने के कारण, मैं उन पत्रकारों से ज्यादातर मुखातिब होती हूं जो कि राजनीति एवं संसद की गतिविधियों को कवर करते हैं। परंतु जैसे कि इन्दौर के लोग जानते हैं कि मैं भारतीय खेल खो–खो से दशकों से जुड़ी हुई हूं। पिछले साल अप्रैल में इन्दौर में तीसरी एशियाई खो–खो चैम्पियनशिप शुरू होने से पहले मैंने खेल पत्रकारों की एक छोटी–सी बैठक दिल्ली में आयोजित की थी। यह मेरे लिए एक अलग अनुभव था।

3. यह देखकर प्रसन्नता होती है कि धीरे–धीरे लोग खेलों में उपलब्धियां प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों से प्रभावित हो रहे हैं। लोगों की मानसिकता में ऐसा बदलाव लाने का श्रेय आप जैसे स्पोर्ट्स राइटर्स को जाता है, जो न केवल खेलों के बारे में लिखते हैं अपितु अपनी लेखनी के माध्यम से खेलों और इसकी उपलब्धियों के बारे में रुचि

जगाकर और जागरूकता बढ़ाकर उभरती हुई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित भी करते हैं। स्पोर्ट्स राइटर्स के बारे में मैं कह सकती हूँ कि आप सब प्रतिभा के धनी हैं। कुछ दशकों पहले तक खेलों का बहुत ही कम सीधा प्रसारण होता था। खेल पत्रकारों द्वारा लिखे गए सृजनात्मक लेखन के द्वारा ही लोगों के मन में खेल दृश्यों का चित्र पुनः उभरता था।

4. मैं अपने युवा काल के उस समय को याद करती हूँ जब हम उत्सुकतापूर्वक सुबह अखबार का इंतजार किया करते थे और पिछले दिन की खेल गतिविधियों के बारे में जानने के लिए खेल कॉलम को पढ़ने के लिए होड़ मच जाती थी। हम आकाशवाणी पर कॉमेंट्री सुनने के अलावा खेल घटनाओं की जानकारी आप जैसे स्पोर्ट्स राइटर्स द्वारा लिखे गए लेखों के माध्यम से प्राप्त करते थे। खेल के मैदान के घटनाक्रम और उत्साह को दर्शाने वाला सजीव चित्रण आप के द्वारा हम सब तक पहुँचता था। पाठकों की रुचि को बनाए रखने के लिए एक स्पोर्ट्स राइटर को खेल की बारीकियों की पूरी जानकारी रखनी पढ़ती है। इससे आप एक खेल विद्या के बारे में जानने के लिये और उस खेल को खेलने के लिये प्रेरित करते है। आज यहाँ पर जो आयोजन हो रहा है वह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। मैं आपके कार्य की सराहना करती हूँ और 19 वर्ष से कम आयु के खिलाड़ियों में से पुरस्कार विजेताओं का चयन करने और सही समय पर प्रमाणपत्रों, किट और नकद राशि प्रदान कर आवश्यक मार्गनिर्देशन दिए जाने के प्रशंसनीय कार्य के लिये आपको बधाई देती हूँ।

5. इन्दौर में खेल पत्रकारिता की एक परम्परा–सी रही है। 70 के दशक के खेल पत्रकारिता के प्रख्यात पत्रकार जैसे स्व. बाला साहेब जगदाले, स्व. जे.डी. मेहता, स्व. सुरेश गवाडे और हमारे एस.पी. चतुर्वेदी, पद्मश्री सुशील दोषी आप लोगों के बीच मुझे स्मरण आते हैं। ये सब इसी एसोसिएशन के संस्थापक सदस्य रहे हैं। उन दिनों खेलकूद को इतने पेशेवर तरीके से कवर नहीं किया जाता था जैसा कि आज के समय में है। यद्यपि इन्दौर देश में क्रिकेट का एक बड़ा केन्द्र माना जाता है, बहुत कम ऐसे पत्रकार थे जो खेल को full time coverage देते थे। परंतु आज स्थिति बदल गई है। आज हम खेलों से जुड़ी खबरों को बहुत तवज्जो देते हैं और वे बड़ी चाव से देखी–सुनी जाती हैं।

6. बॉबी तलयार खान, के.एन. प्रभु, शरद कोटनीस, वी.वी. करमाकर, बाल पंडित, के.आर. वाधवानी, प्रभाष जोशी और सुन्दर राजन जैसे कुछ प्रख्यात खेल पत्रकारिता से जुड़े नाम हैं जो देश के अन्य हिस्सों से आते हैं। पहले बहुत कम समाचार पत्र ऐसे थे जो खेल समाचारों को एक से ज्यादा पेज पर स्थान देते थे। परंतु, आज के समय में ज्यादातर अखबार विभिन्न खेलों की खबरों को महत्व देते हुए उन्हें पर्याप्त कवरेज देते हैं।

7. जहां तक मुझे याद आती है कि सत्तर और अस्सी के दशक में और उससे भी पहले कुछ विशेषज्ञ लेखक हुआ करते थे जो कि क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, बॉक्सिंग एवं एथलेटिक्स इत्यादि के बारे में लिखा करते थे। आज के युग में विशेषज्ञता का विशेष महत्व है।

8. मुझे अनायास ही सन् 1992 में इस्पोरा और वनवासी कल्याण परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ''खेल पत्रकारिता पर प्रथम दो दिवसीय अखिल भारतीय सेमिनार'' की

याद आती है जो कि खेल पत्रकारिता में आ रही कलात्मक और वैज्ञानिक तकनीकों पर केन्द्रित था। यदि हम इन बीती घटनाओं पर नजर डालें, तो यह आज से 25 साल पहले की बात है। तात्पर्य यह है कि उस वक्त भी इन्दौर इन चीजों में अग्रणी रहा है। ऐसे कार्यक्रमों का अधिक–से–अधिक आयोजन किया जाना चाहिए ताकि खेल पत्रकारों को समर्थन एवं प्रोत्साहन मिले।

9. आपको जानकर हर्ष होगा कि मैंने नेहरू स्टेडियम की प्रेस गैलरी में बैठकर एक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच देखने का आनन्द लिया था। आज नेहरू स्टेडियम की जो स्थिति है उस पर हम सबको चिन्तन करना चाहिए।

10. आज चौबीस घंटे–सातों दिन एवं कड़ी प्रतिस्पर्धा वाले टेलीविजन न्यूज चैनल और खेलकूद चैनल के युग में खेल–पत्रकारों के समक्ष एक बड़ी चुनौती है कि किस प्रकार वे स्वस्थ एवं उत्कृष्ट खेल पत्रकारिता कर सकें। यदि खेल को खेलने वाले और उसे जानने–समझने वाले यदि खेल पत्रकारिता करें तो वे इसकी उत्कृष्टता में और वृद्धि कर सकेंगे। खेल पत्रकारिता करने वालों को खेल के quality coverage के लिए तकनीकी एवं वैज्ञानिक पहलुओं की जानकारी होनी चाहिए।

11. इस मंच का सही उपयोग करते हुए मैं सारे खेल पत्रकारों से आग्रह करती हूं कि वे सारे खेलों का balance coverage करें। चूंकि मैं भारतीय खेलों से जुड़ी हुई हूं। मेरा मानना है कि भारतीय खेल जैसे कबड्डी, अट्या–पट्या, खो–खो, मलखम्भ, तीरंदाजी और अपना राष्ट्रीय खेल हॉकी को ज्यादा–से–ज्यादा प्रोत्साहन मिलना चाहिए। महिलाओं से जुड़े

हुए खेलों को भी प्रोत्साहित करना चाहिए। रियो ओलम्पिक में भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन को देखें तो पता चलता है कि सभी तीनों विजेताएं महिलाएं थीं। अतः, खेल पत्रकारों को महिला खिलाड़ियों एवं उनके प्रदर्शन पर विशेष ध्यान देना चाहिए, उन्हें कवरेज देनी चाहिए ताकि और प्रतिभाएं निखरकर सामने आएं।

12. एक जागरूक खेल पत्रकार के रूप में खेल के मैदान, इसके रख–रखाव, खेल संबंधी उपकरणों, sports staudiums के maintenance के साथ–साथ खेल के क्षेत्र में उभरती नई खेल प्रतिभाओं पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि खेल में हो रही गड़बड़ियों पर भी पैनी नज़र रखी जाए।

14. मैं आशा करती हूँ कि हमारा कार्पोरेट सेक्टर खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के लिये इस संबंध में और अधिक सक्रियता से पहल करेगा । कार्पोरेट सेक्टर और खेल से जुड़ी हस्तियों के साथ मिलकर हम वॉलीबॉल, फुटबॉल, टेनिस, बैडमिंटन, कबड्डी इत्यादि जैसे विभिन्न खेलों में प्रतिभाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये और अधिक कोचिंग सुविधाओं को स्थापित कर पाएंगे ।

15. मैं युवा और उभरती हुई प्रतिभाओं का पता लगाने और ऐसे व्यक्तियों, जिनमें भारत के राष्ट्र ध्वज को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर गौरवान्वित करने की क्षमता हो, को प्रोत्साहित करने और उन्हें पुरस्कार प्रदान करने के सराहनीय कार्य के लिए इंदौर स्पोर्ट्स राइटर्स एसोसिएशन को बधाई देती हूँ। मैं इस्पोरा पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक

बधाई देती हूँ। आप सभी अपने–अपने खेल क्षेत्रो में उत्कृष्ट प्रदर्शन करें और हमारे देश का नाम रौशन करें।

धन्यवाद।